मोटरसाइकिल की डिक्की में कुछ किताबें हमेशा रखूँगा

कोरोना काल के दौर में मोहल्ला पुस्तकालय

रामेश्वर प्रसाद लोधी से हिमांशु द्वारा लिया गया साक्षात्कार

कोरोना महामारी के चलते समाज का हर तबक़ा अलग-अलग तरीक़े से प्रभावित हुआ है, लेकिन सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों पर इसकी चौतरफ़ा मार पड़ी है। सीमित संसाधनों या संसाधनों के अभाव में इनके सीखने-सिखाने पर लगभग प्रश्नचिह्न-सा लग गया। इस दौर में सरोकारों व नवाचारों के विविध चेहरे भी देखने को मिले। इनमें एक चेहरा सागर ज़िले के राहतगढ़ के पास कल्याणपुर कस्बे के शासकीय प्राथमिक शाला के रामेश्वर लोधी का रहा है, इन्होंने लॉकडाउन के दौर में भी अपनी लगन और मेहनत से साधनविहीन बच्चों के बीच सीखने-सिखाने का सिलसिला बनाए रखा। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के हिमांशु ने रामेश्वर लोधी से विस्तार से बात करते हुए इस पहल के तमाम पहलुओं को जानने की कोशिश की है। सं.

आपने शिक्षक बनना क्यों पसन्द किया? शिक्षक बनने की अपनी यात्रा के बारे में बताइए।

शिक्षक बनना मेरा सपना नहीं था। मैं कोई ठीक-ठाक सरकारी या प्रायवेट नौकरी करना चाहता था। मेरे मित्र संविदा शाला शिक्षक चयन परीक्षा दिया करते थे। उनको देखकर मैं भी ये परीक्षाएँ देने लगा। तब मैंने डीएड कोर्स नहीं किया था। संविदा शाला शिक्षक परीक्षा में मेरे अच्छे अंक आते थे, लेकिन डीएड पास अभ्यर्थियों को मिलने वाले 20 अंक मुझे न मिल पाने की वजह से मेरे अंक चयन के लिए कम पड़ जाते थे। अतः मैंने तय किया कि मैं डीएड पास करूँगा। अतिथि शिक्षक के रूप में काम करके मैंने डीएड करने के लिए पैसे जमा किए। आगे डीएड पास होने के बाद मेरा संविदा शाला शिक्षक परीक्षा में भी चयन हो गया। 2005 में मैंने संविदा शाला शिक्षक वर्ग-3 की परीक्षा पास कर ली थी। इस तरह मैं शासकीय प्राथमिक शिक्षक बन गया।

वर्ष 2009 में शासकीय माध्यमिक शाला, पचौहा; 2011 में शासकीय हाई स्कूल, मीरखेड़ी; और वर्ष 2012 में शासकीय माध्यमिक शाला, मुरली बासौदा में मैंने अतिथि शिक्षक के रूप में अध्यापन किया। इसी वर्ष संविदा शाला शिक्षक परीक्षा वर्ग-2 में भी मेरा चयन हो गया था। चूँकि मैं अपने माता-पिता की सेवा करने के लिए राहतगढ़ में ही रहना चाहता था, इसलिए मैंने राहतगढ़ शहर से 2 किलोमीटर दूर स्थित शासकीय प्राथमिक शाला, कल्याणपुर में वर्ष 2013 से संविदा शिक्षक वर्ग-3 के रूप में काम करना शुरू कर दिया।

आपको अपने बचपन के कोई शिक्षक याद हैं? और क्यों याद हैं?

मैं शासकीय प्राथमिक शाला, रजौली में पढ़ता था। पाँच कक्षाओं के लिए एक ही शिक्षक थे। उनका नाम नन्दराम अहिरवार है। हमारे स्कूल में कभी कोई अधिकारी निरीक्षण के लिए आया हो, यह मुझे याद नहीं। फिर भी वे सभी तरह के मौसम में ठीक सुबह साढ़े 10 बजे स्कूल पहुँच जाते थे। वे सभी कक्षाओं को एक साथ शाम 4 बजे तक पढ़ाते थे और उसके बाद खेल करवाते थे। उन्होंने बच्चों के साथ

मिलकर स्कूल में सब्ज़ियों की क्यारियाँ बनवाई थीं। इनकी देखरेख की ज़िम्मेदारी कक्षावार दी गई थी। वे स्कूल में एक ऐसी जगह बैठते थे जहाँ से चारों कक्षाओं पर वे एक साथ नज़र रख पाते थे। वे पारम्परिक तरीक़ों से नियमित पढ़ाते थे। वे कक्षा 3 से 5 को पाठ पढ़वाने के बाद बोल-बोल कर स्लेट के दोनों तरफ़ लिखवाते थे। उनका समय पालन और नियमित पढ़ाना मुझे आज भी याद है और प्रेरणा देता है।

क्या आपको बचपन में पुस्तक पढ़ना पसन्द था? किताबें कहाँ से लाते थे? और कौन-सी किताबें आपको पसन्द थीं?

मेरी माताजी को पढ़ना नहीं आता है। बचपन में मेरी दीदी अटक-अटक कर पढ़ती थीं। लेकिन ये दोनों रोज़ाना रात में खाना खाने के बाद मुझे गीता प्रेस, गोरखपुर की *रामायण* की किताब देखने और पढ़ने के लिए प्रेरित करती थीं। जब मुझे पढ़ना नहीं आता था, तब माँ और दीदी मुझे *रामायण* की पुस्तक के चित्रों से जुड़ी कहानियाँ सुनाया करती थीं। जब मैं थोड़ा-थोड़ा पढ़ना सीख गया तो मैं माँ को नियमित रूप से एक घण्टे *रामायण* पढ़कर सुनाया करता था। बाद में मैंने उन्हें कई धार्मिक पोथियाँ भी पढ़कर सुनाईं। मुझे किताबों में चित्रों को देखना और उनके बारे में सुनना अच्छा लगता था। अन्य सहपाठियों के घर पर इस तरह से पढ़ने के मौक़े नहीं बन पाए थे। इसीलिए वे सिर्फ़ स्कूल में पाठ्यपुस्तकें ही पढ़ा करते थे।

आप जिस स्कूल में पढ़ा रहे हैं, क्या उसमें पुस्तकालय है? क्या वह इस्तेमाल होता है? और क्या आपके साथी शिक्षक भी किताबों में रुचि लेते हैं?

साल 2013 में मेरी कल्याणपुर स्कूल में नियुक्ति हुई थी। तब स्कूल में पहले से एक अलमारी में पुस्तकें रखी थीं। लेकिन पुस्तकालय के साथ किस तरह काम करना है, यह समझ न होने की वजह से वह क्रियाशील नहीं था। बाद में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के इंगेजमेंट्स में शामिल होने से यह पता चला कि पुस्तकें बच्चों की पहुँच में होनी चाहिए ताकि वे उसे अपनी पसन्द के अनुसार पढ़ सकें। आगे इनको ध्यान में रखकर पुस्तकालय को सक्रिय किया गया। अब बच्चे ख़ुद पुस्तकें लेकर रजिस्टर में एंट्री करने लगे हैं। पुस्तकालय में शिक्षकों के लिए भी कुछ किताबें हैं, जिन्हें हमारी प्रधानाध्यापिका और मैं पढ़ते हैं।

शिक्षक बनने के बाद आपने कौन-कौन से नवाचार शुरू किए?

अतिथि शिक्षक के रूप में काम करते हुए मैंने अपनी शालाओं को समय से खोलना और पूरे समय संचालित कर समय पर बन्द करना शुरू किया था। मेरे आने के पहले ऐसा नहीं होता था। मैंने स्कूलों में प्रार्थना सभा की भी शुरुआत की। मैंने स्वयं कई प्रार्थनाएँ याद कीं और बच्चों को याद करवाईं। इन कामों को देखकर पालक और ग्रामीण मेरा सम्मान और सहयोग करने लगे थे। मुझे लगता है कि पढ़ाई के लिए सबसे पहले अच्छा माहौल बनाना ज़रूरी है। अतः शासकीय प्राथमिक शाला, कल्याणपुर में संविदा शाला शिक्षक के रूप में मैंने सबसे पहला काम कक्षाकक्ष को पोस्टरों और टीएलएम से समृद्ध करने का किया। कक्षाकक्ष को प्रिंट रिच बनाने के बाद मैंने शाला परिसर को हरा-भरा और रंगीन बनाने के लिए विविध प्रकार के पेड़-पौधे लगाना शुरू किए। मेरे साथ काम करने में बच्चों को भी मज़ा आने लगा। वे स्कूल खुलने के एक घण्टे पहले ही स्कूल पहुँच जाते और मेरे साथ काम में जुट जाते थे। स्कूल बन्द होने के आधे घण्टे बाद तक मैं बच्चों और पालकों के साथ काम और अनौपचारिक बातचीत करता रहता था। मैंने नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा के लिए बच्चों की तैयारी करवाने के लिए उन्हें स्कूल समय से पहले भी अतिरिक्त एक घण्टे पढ़ाना शुरू कर दिया था। सत्र 2019-20 में मेरे स्कूल के एक विद्यार्थी के नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में सफल होने से मेरा सपना पूरा हुआ है और आत्मविश्वास भी बढ़ा है।

पिछले दो सालों से मैंने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्यों की मदद से पक्षी दर्शन, गाँव का इतिहास और गाँधी थीम पर गतिविधियाँ की हैं। इसके तहत हमारे स्कूल में पक्षी थीम पर बाल शोध मेला आयोजित किया गया। गाँव के पास के गुर्जा दहार मेले में गाँधी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सागर के विवेकानन्द विश्वविद्यालय ने इन दोनों थीम पर काम करने के लिए स्कूल के बच्चों को लगातार दो साल अपने 'ज्ञानोत्सव' में पुरस्कृत किया है। गाँधी-150 थीम पर काम को देखकर राहतगढ़ के एसडीएम ने स्कूल को प्रोजेक्टर भेंट करने के लिए 16 हज़ार रुपए की राशि पिछले गणतंत्र दिवस कार्यक्रम में प्रदान की है।

आपके अनुसार कोरोना के कारण बच्चों पर सबसे बड़ा असर क्या हुआ ?

इससे बच्चों की नियमित पढ़ाई बाधित हो गई है। इसकी वजह से कक्षा एक के बच्चे मोहल्ला कक्षाओं में नहीं आ पा रहे हैं। हालाँकि कक्षा दो के बच्चे इनमें आ रहे हैं, लेकिन उन्हें पर्याप्त समय नहीं मिल पा रहा है जिससे उनका सीखना धीमा हो गया है। मेरे स्कूल के कक्षा 1 से 5 के 33 प्रतिशत बच्चे नियमित नहीं आ पा रहे हैं, जिसकी वजह से वे पढ़ाई में पिछड़ रहे हैं।

कोरोना के कारण लॉकडाउन लगने पर पालकों को पहले ऐसा लगा जैसे ये गर्मी की छुट्टियाँ हैं। पालकों को बच्चों को नियमित रूप से घर पर पढ़ाने के सरकार द्वारा दिए गए निर्देश और उपाय भी बताए गए। लेकिन पालकों ने इसे गम्भीरता से नहीं लिया। जब जून माह में भी स्कूल नहीं खुले, तब पालकों ने इसके बारे में सवाल पूछना शुरू किया। हमने उन्हें मोबाइल, टीवी, और रेडियो पर आने वाली शैक्षिक सामग्री के बारे में भी बताया और उन्हें इनका इस्तेमाल करना भी सिखाया। लेकिन बच्चों को घर पर पढ़ाई में अभिभावकों का पर्याप्त सहयोग नहीं मिल पा रहा है। कुछ साक्षर अभिभावकों और बच्चों के बड़े भाई-बहनों ने बताया कि उन्हें पढ़ाने के तरीक़े नहीं आते हैं, जिसकी वजह से उन्हें पढ़ाने में असुविधा होती है।

बच्चों के घरों में पुस्तकालय शुरू करने का विचार आपको कैसे आया ?

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के इंगेजमेंट्स में शामिल होने से मेरी समझ बनी कि पुस्तकालय पर काम करने से एक साथ शिक्षा के कई उद्देश्यों पर काम किया जा सकता है। इसलिए मैंने शैक्षणिक सत्र 2019-20 में अपने स्कूल के पुस्तकालय के माध्यम से बच्चों के साथ काम करना शुरू किया। इसके लिए सबसे पहले कक्षाकक्ष में लोहे के पतले तारों पर किताबों को लटकाया गया। बच्चों की पहुँच में किताबें आने से वे कई किताबों को देखने लगे। जो पढ़ पाते थे, वे पढ़ते और जो नहीं पढ़ पाते, वे अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करते थे। साथ ही प्रत्येक शनिवार को बच्चों को उनकी पसन्द की किताब घर ले जाकर पढ़ने के लिए दी जाने लगी। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के एक सदस्य की तकनीकी मदद से रूम टू रीड संस्था की वेबसाइट पर स्कूल की तरफ़ से अपील डालकर 500 रुपए की किताबें अनुदान के रूप में प्राप्त की गईं। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की ओर से स्कूल को 'झोला पुस्तकालय' भी मिला। इन किताबों के रंगीन चित्रों से बच्चे बहुत आकर्षित हुए। बच्चों ने अँग्रेज़ी की किताबों को भी चित्रों के माध्यम से अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिशें शुरू कर दीं। बच्चों ने पढ़ी गई किताबों के बारे में कुछ लिखना भी शुरू कर दिया था। कक्षा पाँचवीं के अन्तिम पेपर के पहले ही अचानक कोविड-19 की वजह से लॉकडाउन की घोषणा होने से स्कूल के पुस्तकालय की प्रक्रिया ठप्प हो गई।

लॉकडाउन बढ़ने की वजह से बच्चे मुझे फ़ोन कर किताबों की माँग करने लगे। लॉकडाउन में कुछ छूट मिलने पर मैंने उन्हें स्कूल की लाइब्रेरी से कुछ किताबें पढ़ने के लिए दीं। बच्चों ने ये किताबें जल्द ही पढ़ लीं और वे नई किताबों की माँग करने लगे। इस

दौरान अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के डिजिटल इंगेजमेंट्स में मैं नियमित रूप से जुड़ा रहा। साथ ही बच्चों को मोबाइल पर डिजिटल किताबें साझा करता रहा। लेकिन जिन बच्चों के पास मोबाइल नहीं थे वे इन किताबों को नहीं पढ़ पा रहे थे। मैंने लॉकडाउन में ही तय कर लिया था कि अनलॉक शुरू होते ही मैं गाँव में एक पुस्तकालय शुरू करूँगा, ताकि पुनः लॉकडाउन लगने पर भी बच्चे यहाँ से किताबें लेकर पढ़ सकें।

मोहल्ला पुस्तकालयों के शुरू होने की प्रक्रिया के बारे में बताइए ?

जून माह में अनलॉक शुरू होने पर मैंने सबसे पहले कक्षा 5 के विद्यार्थी मोहित और उसके पिताजी से मोहल्ला पुस्तकालय के बारे में बात की। उन्हें मेरी योजना पसन्द आई। मैंने उन्हें पुस्तकालय शुरू करने के लिए 50 किताबें दीं। उनके घर के एक पुराने रैक में ये किताबें रख दी गईं। इस पहले मोहल्ला पुस्तकालय के बारे में बच्चों को बताया गया कि शाम को 5 से 6 के बीच में वे मास्क लगाकर इस पुस्तकालय में आकर अपनी किताबों को बदल सकते हैं और इस दौरान उन्हें एक मीटर की दूरी बनाए रखना ज़रूरी है। शुरू में बच्चे और पालक कोविड-19 से बचाव के उपायों को गम्भीरता से नहीं ले रहे थे, अतः उन्हें इनके बारे में बार-बार बताया गया। इस पुस्तकालय के खुलने से बच्चे नियमित रूप से किताबें पढ़ने लगे और रजिस्टर में इन्हें दर्ज करने लगे।

मोहल्ला पुस्तकालयों के संचालन में किस तरह की चुनौतियाँ आईं और इनका हल कैसे निकाला गया ?

दो सप्ताह बाद मोहित अपने परिवार के साथ अपने रिश्तेदारों के घर चला गया। इस वजह से पुस्तकालय बन्द हो गया। बच्चों ने मुझे इस बारे में फ़ोन पर बताया। कई बच्चे मुझे उनके घर में पुस्तकालय खोलने के लिए कहने लगे। बच्चों की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय को पूर्व छात्र अंकित के माता-पिता से सहमति लेकर उनके घर में शुरू किया गया। इसी बीच मैंने बच्चों के लिए कुछ बाल पत्रिकाओं के पुराने अंक और अख़बारों के साथ आने वाली बाल पत्रिकाएँ एकत्रित कर ली थीं। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्यों से भी कुछ बाल पत्रिकाएँ प्राप्त हुई थीं। ये सभी किताबें इस मोहल्ला पुस्तकालय को दे दी गई थीं। इसका संचालन पूर्व छात्र नितिन और अंकित कर रहे हैं। लेकिन इस लाइब्रेरी के दूसरे मोहल्ले में होने की वजह से कई लड़कियाँ यहाँ नहीं आ पा रही थीं।

लड़कियों से इस बारे में बात करने पर उन्होंने उनके मोहल्ले में आयुष और सलोनी के घर पर पुस्तकालय शुरू करने का सुझाव दिया। आयुष के घर में किराना दुकान होने की वजह से लड़कियाँ भी यहाँ सहजता से आ-जा सकती थीं। अतः सलोनी और आयुष के माता-पिता से सहमति लेकर यहाँ एक और मोहल्ला पुस्तकालय शुरू किया गया। इसके लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से एक झोला पुस्तकालय प्राप्त हुआ। इसमें 30 मज़ेदार रंग-बिरंगी किताबें थीं। बाद में इसमें कुछ बाल पत्रिकाओं जैसे– *प्लूटो, चकमक* और *साइकिल* के पुराने अंकों को भी शामिल किया गया। इस पुस्तकालय की ज़िम्मेदारी कक्षा 5 के विद्यार्थी आयुष और पूर्व छात्र कपिल (कक्षा 6) और पूर्व छात्रा सलोनी (कक्षा 8) ने सँभाली है।

कल्याणपुर की एक दूसरी बस्ती, जिसे कल्याणपुर माल कहा जाता है, में रहने वाले बच्चे अब भी किताबों से वंचित थे। दोनों बस्तियों के बीच में लगभग 1 किलोमीटर की दूरी होने की वजह से माता-पिता बच्चों को यहाँ अकेले जाने से मना करते थे। इसी बस्ती में रहने वाली स्कूल की पूर्व छात्राओं मोहनी (कक्षा 7) और भावना (कक्षा 10) की मदद से यहाँ भी एक मोहल्ला पुस्तकालय शुरू किया गया। किताबों की सुरक्षा और डिस्प्ले करने के लिए मेरी पत्नी ने पुरानी साड़ी से एक हैंगर तैयार करके इस पुस्तकालय को दिया है।

इन पुस्तकालयों का इस्तेमाल करने वाले बच्चों के सीखने में क्या बदलाव दिख रहे हैं?

मैंने अपने अवलोकन में पाया है कि कक्षा तीसरी की छात्रा अनु ध्यान से किताबों को देखती है और अनुमान लगाने की कोशिश करती है। कक्षा तीसरी की ही एक अन्य छात्रा महक बड़े चित्रों को देखने में रुचि ले रही है। लेकिन उसने अभी शब्दों को पहचानना शुरू नहीं किया है। कक्षा 2 का छात्र अनुज ख़ुद धीरे-धीरे किताब पढ़ता है और मौखिक रूप से उसे अपने वाक्यों में बता पाता है। कक्षा 5 की छात्रा निधि सभी बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाती है। कक्षा 5 की ही निशा के हार्ट का ऑपरेशन होने की वजह से वह कमज़ोर है और अकसर बीमार रहती है। वह अपनी माताजी के साथ पुस्तकालय आती है या अपने दोस्तों से किताबें मँगवाती है। वह किताबों को पढ़कर समझ पाती है। स्कूल का पूर्व छात्र कपिल (कक्षा 6) किताबों में विज्ञान से सम्बन्धित बातों को पढ़ने में रुचि लेता है। स्कूल का पूर्व छात्र नितिन किताबों को देखकर चित्र बनाता है। पूर्व छात्र कुश (कक्षा 6) सौरमण्डल से सम्बन्धित लेखों को पढ़ने में रुचि ले रहा है। एक पूर्व छात्रा श्रद्धा (कक्षा 6) लड़कियों के पात्रों वाली किताबों को पढ़ने में ज़्यादा रुचि लेती है। बीए पास कर चुके सोनू जानकारियों वाली किताबें पढ़ते हैं। वे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। स्कूल की पूर्व छात्रा भावना की पढ़ाई आर्थिक कारणों से एक साल के लिए रुक गई थी। अब वह सभी तरह की किताबें पढ़ने में बहुत रुचि लेती है और ख़ुद कविताएँ भी लिखती है। वह एक मोहल्ला पुस्तकालय का संचालन भी कर रही है। उसने इस साल दसवीं कक्षा की प्रायवेट परीक्षा देने के लिए भी पढ़ाई शुरू कर दी है।

क्या सभी बच्चे मोहल्ला पुस्तकालय का लाभ ले पा रहे हैं?

कल्याणपुर प्राथमिक स्कूल में कुल 47 बच्चे हैं। गाँव में अब तक खुले 3 मोहल्ला पुस्तकालयों का इस्तेमाल 40 बच्चे कर पा रहे हैं। इनके अलावा स्कूल के पूर्व छात्र भी इनका इस्तेमाल कर रहे हैं। ये सभी बच्चे गाँव की दोनों बस्तियों कल्याणपुर माल और कल्याणपुर वीर के हैं। कल्याणपुर माल में एक और कल्याणपुर वीर में दो मोहल्ला पुस्तकालय हैं।

स्कूल से दो किलोमीटर दूर जंगल के पास रहने वाले एक ही परिवार के 5 बच्चे अभी भी किसी भी मोहल्ला पुस्तकालय का लाभ नहीं ले पा रहे हैं। उन तक किताबों को पहुँचाने के लिए उनके अभिभावकों को किताबें ले जाने और लाने के लिए कहा गया है। राहतगढ़ शहर में रहने वाले दो बच्चे भी अभी किसी मोहल्ला पुस्तकालय से नहीं जुड़ पाए हैं। अतः स्कूल आते-जाते समय उन्हें घर पर ही किताबें पहुँचाने की ज़िम्मेदारी मैंने स्वयं लेने का फ़ैसला किया है।

पुस्तकालयों के बारे में पालकों और ग्रामीणों का क्या कहना है? लोगों ने किस तरह का सहयोग किया है?

गाँव के वयस्कों ने अपने जीवन में पाठ्यपुस्तकें ही देखी थीं। झोला पुस्तकालय और रूम टू रीड की रंगीन किताबें देखकर वे हैरान होते हैं। इन किताबों में छपी कहावतों और कहानियों को देखकर भी वे हैरान होते हैं कि ये पुरानी कहानियाँ नए चित्रों के साथ अब रंगीन किताबों में आ गई हैं। कल्याणपुर माल के कई अभिभावक साक्षर नहीं हैं। मैंने ख़ुद उन्हें नई किताबों को खोलकर दिखाया और समझाया कि इन रोचक किताबों के ज़रिए बच्चों का पढ़ने में मन लगेगा। वे मेरी बातों से सहमत हुए। अंकित के माता-पिता ने जब देखा कि छोटे बच्चे बरसात में भीगते हुए किताबें लेकर आते हैं, तब उन्होंने बच्चों को किताबों को भीगने से बचाकर लाने की सलाह दी और कुछ उपाय बताए। मोहल्ला पुस्तकालयों को खोलने में भी कई अभिभावकों ने सहयोग किया। कई अभिभावकों ने इस पहल की सराहना भी की है।

राहतगढ़ में रहने वाले सहायक प्राध्यापक सुरेन्द्र कुमार यादव ने मोहल्ला पुस्तकालय में बच्चों की रुचि को देखते हुए हाल ही में मुझे 7 हज़ार रुपए की किताबें देने के लिए प्रकाशकों

और विक्रेताओं को ऑनलाइन पर्चेस आर्डर भेजे हैं। मैं इन किताबों का इस्तेमाल रोटेशन से मोहल्ला पुस्तकालयों में करूँगा। राहतगढ़ के बीएसी विनोद ताम्रकार ने 75 बाल पत्रिकाएँ पुस्तकालयों के लिए दी हैं। पत्रकार वीरेन्द्र सिंह ठाकुर और असलम रंगरेज़ ने भी अख़बारों की बाल पत्रिकाएँ दी हैं।

पुस्तकालय में पुस्तकों से जुड़ी गतिविधियों के बारे में बताइए ?

बच्चे ख़ुद ही किताबों की देखभाल और रखरखाव करते हैं। किताबें लेते-देते समय ख़ुद ही एंट्री करते हैं। 19 बच्चे अपनी पढ़ी किताबों की सूची ख़ुद तैयार कर रहे हैं। 6 बच्चे किताबों से सम्बन्धित सूचनाओं जैसे– लेखक, चित्रकार, प्रकाशन, पेज, क्या अच्छा लगा, आदि को लिख रहे हैं। जिन बच्चों के पास मोबाइल उपलब्ध हैं, उनके साथ स्कूल का एक वॉट्सएप समूह बनाकर किताबें और अन्य सामग्रियाँ साझा की जा रही हैं। पर्यावरण अध्ययन विषय के विशेषज्ञ के रूप में राज्य शिक्षा केन्द्र से मिलने वाले अकादमिक कामों के चलते मैं पुस्तकालय की गतिविधियों में पर्याप्त समय नहीं दे पा रहा हूँ। फिर भी मेरी कोशिश है कि मैं कुछ बच्चों को गतिविधियों के लिए तैयार करूँ ताकि मेरी अनुपस्थिति में भी गतिविधियाँ चलती रहें।

बच्चों को पुस्तकालय में कैसा लगता है ? वे स्वयं भी कुछ करते हैं ? और क्या वे कुछ सुझाव भी देते हैं ?

झोला पुस्तकालय में जो नई किताबें आती हैं, हर बच्चा उनमें से एक किताब हासिल करना चाहता है। छोटे बच्चे भी बड़ी किताबें ले जाते हैं। वे पढ़ नहीं पाते हैं, लेकिन वे चित्र देखकर अपनी बातों को रखते हैं। कई बच्चे किताबों से देखकर चित्र बनाते हैं और कई बच्चे किताबों की कहानियों की नक़ल लिखकर लाते हैं। वे अपनी पढ़ी गई किताबों पर चर्चा करने के लिए आतुर रहते हैं, लेकिन समय पर्याप्त न होने की वजह से अभी मैं सभी बच्चों को चर्चा का मौक़ा नहीं दे पाता हूँ। बच्चे किताब लेते या लौटाते समय ख़ुद ही रजिस्टर में एंट्री करते हैं। जिन बच्चों के घर आसपास हैं, वे आपस में भी किताबें पढ़कर बदल लेते हैं। इस दौरान वे एक दूसरे को कहानी की कथावस्तु और पात्रों के परिचय भी देते हैं। बच्चे चित्र बनाने के लिए काग़ज़ और रंगों की माँग करते रहते हैं। बच्चों ने पुस्तकालय के लिए स्थान के चयन और इनकी व्यवस्थाएँ बनाने के सम्बन्ध में कई व्यावहारिक एवं उपयोगी सुझाव दिए हैं। बच्चे किताबों को पढ़ने और चुनने के बारे में भी एक दूसरे को सुझाव देते हैं।

पुस्तकालय में आप क्या-क्या गतिविधियाँ कर रहे हैं ? संक्षेप में उनके बारे में बताइए।

जब मैं पुस्तकालय जाता हूँ, तो बच्चों को एक कहानी पढ़कर सुनाता हूँ। इस दौरान मैं चित्रों पर चर्चा करता हूँ और बच्चों को अनुमान लगाने के मौक़े देता हूँ। कहानी में आए नए शब्दों को और उनकी अवधारणा को मैं उदाहरणों के साथ अपनी बात से स्पष्ट करता हूँ। लेखक, चित्रकार, प्रकाशक, आदि के बारे में चर्चा करता हूँ। कथ्य को मैं हावभाव के साथ पढ़ता हूँ। बच्चों को उनकी रुचि की किताब से चित्र बनाने या लिखने के काम देता हूँ। मैं ऐसी किताबों को चुनता हूँ जिनमें चित्र ज़्यादा होते हैं एवं जिनके विषय बच्चों की रुचि के होते हैं और जो 15 मिनट में पूरी हो सकें। कई बार मैं बच्चों द्वारा चुनी गई कहानी की पुस्तकों को भी पढ़कर सुनाता हूँ।

आप भौतिक दूरी बनाए रखने और कोरोना से सुरक्षा के लिए क्या उपाय करते हैं ? जब कभी बहुत-से लोग और बच्चे एक साथ पुस्तकालय में आ जाते हैं, तब आप क्या करते हैं ?

जिन बच्चों के घरों में मोहल्ला पुस्तकालय चल रहे हैं, उनके परिवार के सभी सदस्यों को बच्चों के बीच भौतिक दूरी बनाए रखने के निर्देश मैंने दिए हैं। साबुन की व्यवस्था भी की गई है, ताकि बच्चे आते और जाते समय हाथ धो सकें। बच्चों को मास्क लगाकर ही पुस्तकालय आने के लिए कहा गया है। मैं जब जाता हूँ, तो बच्चों के हाथ सेनेटाइज़र से भी साफ़ करवाता हूँ।

कुछ बच्चों ने मुझे वॉट्सएप पर फ़ोटो भेजे थे, जिनमें कई बच्चे बिना दूरी बनाए या मास्क लगाए किताबों का इस्तेमाल कर रहे थे। मैंने तुरन्त ही अभिभावकों को फ़ोन करके बच्चों से सुरक्षा और सावधानी के निर्देश पालन कराने के लिए कहा था। मैं इन निर्देशों को दोहराता भी रहता हूँ, लेकिन फिर भी मेरी अनुपस्थिति में कई बार पुस्तकालय में बहुत बच्चे जमा हो जाते हैं। परन्तु मेरी उपस्थिति में पुस्तकालय में एक मीटर की दूरी सभी लोगों के बीच बनी रहे, इसका मैं विशेष ध्यान रखता हूँ।

क्या ऐसे पुस्तकालय और जगह भी खोले जा सकते हैं ? आगे क्या योजना है ?

हाँ, ऐसे पुस्तकालय और जगह भी खोले जाने चाहिए। सुरक्षा और सावधानियों के निर्देशों का पालन करने के लिए बच्चों और अभिभावकों को निरन्तर निर्देश देना ज़रूरी है। मोहल्ला पुस्तकालयों से बच्चों में किताबों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। बच्चों और शिक्षकों को भी पुस्तकालय और किताबों के साथ नई-नई गतिविधियाँ करने के अवसर मिलते हैं। *किताबों की किताब* पुस्तक में ऐसी कई गतिविधियाँ दी गई हैं जिन्हें करने में बच्चों को मज़ा आता है। इसे इंटरनेट से डाउनलोड भी किया जा सकता है।

कोरोना दौर के बाद परिस्थितियाँ सामान्य होने पर पुस्तकालयों में पुस्तकों को लेकर बच्चों के साथ कई तरह की गतिविधियाँ करने की योजना है, जैसे– बालसभा में बच्चे पुस्तकों से पढ़ी कहानियाँ सुनेंगे और सुनाएँगे। कहानियों को लेकर बच्चों से चित्र, शब्द कार्ड, शब्द पट्टी बनवाकर इसे प्रिंट रिच वातावरण और प्रोफ़ाइल के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। बातचीत के ज़रिए बच्चों को किताबों की समीक्षा करना और विश्लेषण करना सिखाया जाएगा। गाँव की कहावतों, पहेलियों, लोककथाओं पर बच्चों से किताबें तैयार करवाई जाएँगी।

प्रत्येक शनिवार को स्कूल खुलने से एक घण्टे पहले बच्चों के साथ बैठकर सप्ताह में पढ़ी गई पुस्तकों की समीक्षा की जाएगी। इसके ज़रिए जो बच्चे किताबें पढ़ पा रहे हैं उनके बीच विचारों की साझेदारी बढ़ाने की योजना है। गाँव के मोहल्ला पुस्तकालयों को आगे सुचारु रूप से संचालित करने के लिए गाँव के वयस्कों, युवाओं और स्कूल की पूर्व छात्राओं को भी इनसे जोड़ने की योजना है। इसके लिए युवाओं की रुचि और आवश्यकताओं के अनुरूप किताबें जुटाने की भी योजना है। मैंने अब यह तय किया है कि मैं अपनी मोटरसाइकिल की डिक्की में भी बच्चों के लिए कुछ किताबें हमेशा रखूँगा। यह एक चलित पुस्तकालय होगा। जो बच्चे अब तक पुस्तकालय से नहीं जुड़ पाए हैं, उन तक भी मैं किताबों को पहुँचाऊँगा। मैं राहतगढ़ में अपने घर पर भी एक पुस्तकालय शुरू करूँगा, मेरे परिवार के सदस्य इसका संचालन करने के लिए तैयार हैं।

रामेश्वर प्रसाद लोधी पिछले 7 वर्षों से शासकीय प्राथमिक शिक्षक हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश के सागर ज़िले के राहतगढ़ ब्लॉक की शासकीय प्राथमिक शाला, कल्याणपुर में पदस्थ हैं।

सम्पर्क : rameshwarlodhi1983@gmail.com

हिमांशु खोले पिछले 6 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश के सागर ज़िले के खुरई ब्लॉक में काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : himanshu.khole@azimpremjifoundation.org